हरछठ (हलषष्ठी) व्रत कथा

संतान की दीर्घायु व सुरक्षा हेतु पढ़ी-सुनी जाने वाली पारंपरिक कथा

कथा प्रारंभ

महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद हस्तिनापुर में शोक का वातावरण था। सुभद्रा अपने पुत्र अभिमन्यु को खो चुकी थीं, और द्रौपदी अपने पांचों पुत्रों की मृत्यु से व्याकुल थीं। इसी बीच एक और संकट सामने आया — अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा गर्भवती थीं, और युद्ध के अंतिम दिनों में क्रोधित अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर उनके गर्भ को क्षति पहुंचाई थी। समूचा राजपरिवार इस आशंका से भयभीत था कि कहीं वंश का यह अंतिम दीपक भी बुझ न जाए।

व्यथित राजा युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण के पास पहुंचे और उनसे प्रार्थना की कि वे कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे उत्तरा के गर्भ की रक्षा हो सके। भगवान श्रीकृष्ण ने राजा को सांत्वना देते हुए कहा कि यदि उत्तरा श्रद्धापूर्वक हलषष्ठी माता का व्रत करें, तो गर्भ में पल रही संतान सुरक्षित रहेगी। उन्होंने समझाया कि यह व्रत भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष षष्ठी तिथि को किया जाता है, और इसमें हल से जोता हुआ कोई अन्न या गाय का दूध-दही ग्रहण नहीं किया जाता, क्योंकि यह व्रत सीधे बलराम जी की उस शक्ति का आह्वान करता है जो हल और मूसल के रूप में प्रकट होती है।

व्रत का पालन और फल

श्रीकृष्ण के वचनों पर विश्वास कर उत्तरा ने विधिपूर्वक हलषष्ठी माता का व्रत रखा। उन्होंने पूरे दिन उपवास रखा, हल से जुते अन्न का त्याग किया, और श्रद्धापूर्वक हलषष्ठी माता का पूजन कर व्रत कथा सुनी। कहा जाता है कि इस व्रत के प्रभाव से अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से क्षीण हुआ गर्भ पुनः सजीव हो उठा। समय आने पर उत्तरा ने एक स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया, जो आगे चलकर राजा परीक्षित के नाम से प्रसिद्ध हुए और हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठे। इसी घटना के बाद से यह मान्यता चली आ रही है कि हलषष्ठी माता का व्रत संतान की रक्षा और दीर्घायु प्रदान करता है।

कथा की सीख

यह कथा केवल एक चमत्कार की कहानी नहीं, बल्कि श्रद्धा, संयम और मातृ-वात्सल्य की शक्ति का प्रतीक है। इसमें बताया गया है कि प्रकृति द्वारा दिए गए अन्न-जल का भी विवेकपूर्ण और मर्यादित उपयोग होना चाहिए, और संकट की घड़ी में धैर्य व आस्था बनाए रखने से बड़ी से बड़ी बाधा भी दूर हो सकती है। इसी भाव के साथ आज भी माताएं अपनी संतान की दीर्घायु के लिए यह व्रत रखती हैं और यह कथा सुनती-सुनाती हैं।

पारदर्शिता नोट: यह कथा हलषष्ठी/हरछठ व्रत की परंपरा में सदियों से मौखिक रूप से प्रचलित एक लोक-पौराणिक कथा है, जिसे यहां मौलिक शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। कथा के विवरण क्षेत्र और परंपरा के अनुसार थोड़े भिन्न हो सकते हैं।